आलस्य और अलबेलापन - 16

अव्यक्त बापदादा :- (30.05.1973)

➳ _ ➳ जिस प्रकार का गीत गाते हैं, उसी रूप में स्थित होकर गाते हैं। अगर कोई दु:ख का गीत होता है तो दु:ख का रूप धारण कर गीत न गाये तो सुनने वालों को उस गीत से कोई रस नहीं आयेगा। जब हद का गीत गाने वाले व रिकॉर्ड भरने वाले भी इन सभी बातों का ध्यान देते हैं तो आप बेहद का रिकार्ड भरने वाले, सारे कल्प का रिकार्ड भरने वाले क्या हर समय इन सभी बातों के ऊपर अटेन्शन देते हो?

➳ _ ➳ यह अटेन्शन रहता है कि हर सेकेण्ड रिकार्ड भर रहा हूँ? क्या इतना अटेन्शन रहता है? रिकार्ड भरते-भरते अगर उल्लास के बजाय आलस्य आ जाय तो रिकार्ड कैसे भरेगा रिकार्ड भरने के समय क्या कोई आलस्य करता है? तो आप लोग भी जब रिकार्ड भर रहे हो तो भरते-भरते आलस्य आता है या सदैव उल्लास में रहते हो? कभी अपने भरे हुए सारे दिन के रिकार्ड को साक्षी होकर देखते हो कि आज का रिकार्ड कैसा भरा है?

➢➢ जिस प्रकार का गीत गाते हैं उसी रूप में स्थित होते हैं

➳ _ ➳ ख़ुशी का गीत होगा तो खुश होंगे फिर गीत गायेंगे

➳ _ ➳ **चाहे गायक हो, चाहे वक्ता हो, चाहे चित्रकार हो सबकुछ उसकी मनःस्थिति पर निर्भर रहता है**

➳ _ ➳ कोई दुःख का गीत होता है तो दुखी होना पड़ेगा, नहीं तो सुनने वालों को उसका रस नहीं आएगा

➳ _ ➳ **जिस भी कार्य को करना हो उसके अनुरूप स्वयं को स्थित करना पड़ेगा**

➳ _ ➳ **अगर ख़ुशी का गीत गाना है परन्तु व्यक्ति अन्दर से दुखी है तो कितना भी कोशिश करे, आवाज अच्छी हो फिर भी उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा**

➳ _ ➳ **अगर कोई शांति का चित्र बनाना है तो पहले स्वयं को शांत करना पड़ेगा**

➳ _ ➳ अगर युद्ध का, शौर्य का चित्र बनाना है तो उसी भाव में स्थित होना पड़ेगा

➳ _ ➳ चित्रकार, गीतकार, उपन्यासकार, मूर्तिकार को पहले उस स्थिति में स्वयं ही स्थित हो जाना पड़ेगा

➳ _ ➳ श्रेष्ठ भाव में स्थित होकर हर चीज करना है

➳ _ ➳ **हर कर्म श्रेष्ठ होने के लिए लिए- 'मैं महान आत्मा हूँ'- इस भाव में स्थित होना होगा**

➳ _ ➳ **फ़रिश्तास्वरुप बनने के लिए सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्थिति में स्थित होना होगा**

➳ _ ➳ रिकॉर्डिंग करते समय गायक को बहुत प्रैक्टिस करनी पड़ती है

➳ _ ➳ जब हद का गीत गाने वाले इन बातों का ध्यान देते हैं तो बेहद का गीत गाने वालों को अटेंशन देना है

➳ _ ➳ हर सेकंड रिकॉर्ड भर रहा हूँ क्या इतना अटेंशन रहता है?

➳ _ ➳ **रिकार्ड भरते समय उल्लास के बजाय आलस्य आ जाय तो रिकार्ड कैसे भरेगा**

➳ _ ➳ कभी अपने भरे हुए सारे दिन के रिकार्ड को साक्षी होकर देखते हो कि आज का रिकार्ड कैसा भरा है?

→ **अमृतवेले से लेकर रात तक का सारे दिन का रिकॉर्ड with audio रोज देखना है**

→ **स्वयं को साक्षी होकर देखना है यही सब धर्म का सार है**

- आत्मा भिन्न और ये शरीर भिन्न है
- जो हूँ जैसा हूँ स्वयं को देखना है
- मैं आत्मा स्वयं को देख रही हूँ
- दुःख, पीड़ा शरीर में हो रही है मुझे नहीं

अव्यक्त बापदादा :- (13.06.1973)

➳ _ ➳ जैसे योद्धे सर्व व्यक्तियों, सर्व-वैभवों का किनारा कर युद्ध और विजय इन दो बातों को सिर्फ बुद्धि में रखते हुए अपने लक्ष्य को पूर्ण करने में लगे हुए होते हैं। वैसे ही अपने-आप से पूछो कि इन दो बातों का लक्ष्य है? या और भी कई बातें स्मृति में रहती हैं? ऐसे योद्धे बने हो? कहीं भी रहो लेकिन सदैव यह स्मृति रहे कि हम युद्ध के मैदान पर उपस्थित हुए योद्धे हैं।

➳ _ ➳ योद्धे कभी भी आराम पसन्द नहीं होते हैं। योद्धे कभी भी आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते, योद्धे कभी भी शस्त्रों के बिना नहीं रहते, सदैव शस्त्रधारी होते हैं, योद्धे कभी भी भय से वशीभूत नहीं होते, निर्भय होते हैं, योद्धे कभी भी सिवाय युद्ध के और कोई बातें बुद्धि में नहीं रखते। सदैव योद्धेपन की वृत्ति और विजयी बनने की स्मृति में रहते हैं। क्या हम सभी भी एक-दूसरे के साथ विजयी रहते हैं? इस दृष्टि से एक-दूसरे को देखते हैं।

➳ _ ➳ ऐसे ही रूहानी योद्धों की सदैव दृष्टि में यह रहता है कि हम सभी एक दूसरे के साथ महावीर हैं, विजयी है। हम हर सेकेण्ड हर कदम में युद्ध के मैदान पर उपस्थित हैं। सिर्फ एक ही लगन विजयी बनने की रहती है। सर्व सम्बन्ध का सर्व प्रकृति के साधनों से अपनी बुद्धि को डिटैच कर दिया है? किनारा कर लिया है? या युद्ध के मैदान में हो लेकिन बुद्धि की तारें, सम्बन्ध वा कोई भी प्रकृति के साधनों में लगी हुई है? अपने को सम्पूर्ण स्वतन्त्र समझते हो? या कोई बात में परतन्त्र भी हो?

➢➢ योद्धे

➳ _ ➳ योद्धे कभी भी आरामपसंद नहीं होते हैं

➳ _ ➳ **योद्धे कभी भी आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते**

➳ _ ➳ योद्धे कभी भी शस्त्रों के बिना नहीं रहते, सदैव शस्त्रधारी होते हैं

→ हमारे शस्त्र हैं-

- ज्ञान
  - **ज्ञान के सामने कोई भी परिस्थिति, समस्या नहीं टिक सकती**
  - आत्मा को ज्ञान की अव्यक्त आँखें मिली है

- स्मृति

➳ _ ➳ योद्धे कभी भी भय से वशीभूत नहीं होते, निर्भय होते हैं

➳ _ ➳ **योद्धे कभी भी सिवाय युद्ध के और कोई बातें बुद्धि में नहीं रखते**

→ बुद्धि क्रिकेट, राजनीति, TV, मोबाइल किसी में नहीं रहता

➳ _ ➳ योद्धे सदैव योद्धेपन की वृत्ति और विजयी बनने की स्मृति में रहते हैं

➳ _ ➳ जो विजयीभव के वरदानी आत्माएं हैं वो-

→ सदैव सहारे के नीचे स्वयं को अनुभव करते हैं

→ कभी भी बेसहारे या अकेलेपन के भाव में नहीं रहते

→ **कभी भी उदासी या हद का वैराग उनमें नहीं आता**

→ कार्य करते चाहे कार्य, व्यक्ति और समस्या से किनारा नहीं करते, कार्य करते हुए सामना करते हैं और सहयोग देते हैं, और बेहद की वैराग्य वृत्ति में रहते हैं

➳ _ ➳ एक दूसरे को विजयी की दृष्टि से देखना है

➳ _ ➳ ये भी महावीर हैं, वो भी महावीर हैं

➳ _ ➳ **हम हर सेकंड, हर कदम युद्ध के मैदान में उपस्थित हैं**

→ **बाबा ने कहा- 'तुम हर एक युद्ध के मैदान में Independent सिपाही हो'**

➳ _ ➳ सिर्फ एक ही लगन विजयी बनने की रहती है बस जीतना है

➳ _ ➳ सर्व सम्बन्ध का सर्व प्रकृति के साधनों से अपनी बुद्धि को डिटैच कर दिया है?

➳ _ ➳ अपने को सम्पूर्ण स्वतन्त्र समझते हो? या कोई बात में परतन्त्र भी हो?

→ **अगर निर्बन्धन नहीं तो ऊँच स्टेज तक नहीं पहुँच सकते**

→ मनसा, वाचा, कर्मणा कोई रस्सी या धागा ना हो

→ सूक्ष्म में भी कोई संकल्प नहीं

→ कोई देहधारी खींचे नहीं,

→ **मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों में निर्बन्धन**

→ ऐसी अचल, अडोल स्थिति होनी चाहिए